कथा सरिता

मन का दर्पण

एक गुरुकुल के आचार्य अपने शिष्य की सेवा से बहुत प्रभावित हुए। विद्या पूरी होने के बाद जब शिष्य विदा होने लगा तो गुरू ने उसे आशीर्वाद के रूप में एक दर्पण दिया। वह साधारण दर्पण नहीं था। उस दिव्य दर्पण में किसी भी व्यक्ति के मन के भाव को दर्शाने की क्षमता थी।

शिष्य गुरू के इस आशीर्वाद से बड़ा प्रसन्न था। उसने सोचा कि चलने से पहले क्यों न दर्पण की क्षमता की जांच कर ली जाए। परीक्षा लेने की जल्दबाज़ी में उसने दर्पण का मुँह सबसे पहले गुरूजी के सामने कर दिया। शिष्य को तो सदमा लग गया। दर्पण यह दर्शा रहा था कि गुरुजी के हृदय में मोह, अहंकार, क्रोध आदि दुर्गुण स्पष्ट नज़र आ रहे हैं।

मेरे आदर्श, मेरे गुरूजी इतने अवगुणों से भरे हैं! यह सोचकर वह बहुत दु:खी हुआ। दु:खी मन से वह दर्पण लेकर गुरुकुल से रवाना तो हो गया लेकिन रास्ते भर उसके मन में एक ही बात चलती रही कि जिन गरूजी को मैं समस्त दुर्गुणों से रहित एक आदर्श पुरूष समझता था, लेकन दर्पण ने तो कुछ और ही बता दिया।

उसके हाथ में दूसरों को परखने का यंत्र आ गया था, इसलिए उसे जो मिलता उसकी परीक्षा ले लेता। उसने अपने कई इष्ट मित्रों तथा अन्य परिचितों के सामने दर्पण रखकर उनकी परीक्षा ली। सबके हृदय में कोई न कोई दुर्गुण अवश्य दिखाई दिया। जो भी अनुभव रहा सब दु:खी करने वाला। वह सोचता जा रहा था कि संसार में सब इतने बुरे क्यों हो गए हैं। सब दोहरी मानसिकता वाले लोग हैं। जो दिखते हैं दरअसल वे हैं नहीं। इन्हीं निराशा से भरे विचारों में डूबा दु:खी मन से वह किसी तरह घर तक पहुंच गया।

उसे अपने माता-पिता का ध्यान आया। उसके पिता की तो समाज में बड़ी प्रतिष्ठा है। उसकी माता को तो लोग साक्षात देवतुल्य ही कहते हैं। इनकी परीक्षा की जाए। उसने उस दर्पण से माता-पिता की भी परीक्षा कर ली। उनके हृदय में भी कोई न कोई दुर्गुण देखा। ये भी दुर्गुणों से पूरी तरह मुक्त नहीं हैं। संसार सारा मिथ्या पर चल रहा है। अब उस बालक के मन की बेचैनी सहन के बाहर हो चुकी थी। उसने दर्पण उठाया और चल दिया गुरुकुल की ओर। शीघ्रता से पहुंचा और सीधा जाकर अपने गुरूजी के सामने खड़ा हो गया। गुरूजी उसके मन की बेचैनी देखकर सारी बात का अंदाज़ा लगा चुके थे।

शिष्य ने गुरुजी से विनम्रतापूर्वक कहा - गुरूदेव, मैंने आपके दिए दर्पण की मदद से देखा कि सबके दिलों में तरह-तरह के दोष हैं। कोई भी दोषरहित सज्जन मुझे अभी तक क्यों नहीं दिखा? क्षमा के साथ कहता हूँ कि स्वयं आपमें और अपने माता-पिता में मैंने दोषों का भंडार देखा। इससे मेरा मन बड़ा व्याकुल है।

तब गुरूजी हँसे और उन्होंने दर्पण का रुख शिष्य की ओर कर दिया। शिष्य दंग रह गया। उसके मन के प्रत्येक कोने में राग-द्वेष, अहंकार, क्रोध जैसे दुर्गुण भरे पड़े थे। ऐसा कोई कोना ही न था जो निर्मल हो।

गुरूजी बोले - बेटा, यह दर्पण मैंने तुम्हें अपने दुर्गुण देखकर जीवन में सुधार लाने के लिए दिया था, ना कि दूसरों के दुर्गुण खोजने के लिए। जितना समय तुमने दूसरों का दुगुर्ण देखने में लगाया, उतना समय यदि तुमने स्वयं को सुधारने में लगाया होता तो अब तक तुम्हारा व्यक्तित्व बदल चुका होता। मनुष्य की सबसे बड़ी कमज़ोरी यही है कि वह दूसरों के दुर्गुण जानने में ज़्यादा रुचि रखता है। स्वयं को सुधारने के बारे में नहीं सोचता। इस दर्पण की यही सीख है जो तुम नहीं समझ सके। यदि हम स्वयं में थोड़ा-थोड़ा करके सुधार करने लगें तो हमारा व्यक्तित्व परिवर्तित हो जाएगा।

बेशकीमती तोहफा

एक 16 साल के लड़के ने अपनी मम्मी से पूछा कि मम्मी, मुझे 18वें साल के जन्मदिन पर क्या गिफ्ट दोगी? तो उस लड़के की मम्मी ने उससे कहा कि जब तेरा 18वां साल आएगा तो आलमारी के अंदर देख लेना, उसमें तेरा गिफ्ट रहेगा। अभी बता दूंगी तो गिफ्ट का मज़ा नहीं आएगा। कुछ दिन बाद वो लड़का बीमार हो गया। उसके मम्मी पापा उसको अस्पताल लेकर गए। जाँच के बाद डॉक्टर ने लड़के के माता पिता से कहा कि इसके दिल में छेद है, अब ये 2 महीने से ज़्यादा नहीं जी पायेगा।

2 साल भर बात लड़का ठीक होकर घर गया तो उसे पता चला कि उसकी माँ नहीं रही। उसे ये पता चलते ही उसने आलमारी खोली और उसने देखा कि आलमारी में एक गिफ्ट पड़ा था। उसने जल्दी से वो गिफ्ट खोला, तो उस गिफ्ट में एक चिट्ठी थी। उस चिट्ठी में लिखा था कि ''मेरे जिगर के टुकड़े, अगर तू ये चिट्ठी पढ़ रहा है तो तू बिल्कुल ठीक होगा। तूझे याद है कि जब तू बीमार हुआ था तब हम तुझे अस्पताल लेकर गए थे। डॉक्टर ने कहा कि तेरे दिल में छेद है, तो उस दिन मैं बहुत रोई और फैसला किया कि मेरा दिल तुझे दूंगी। याद है एक दिन तूने कहा था कि मम्मी मुझे 18वें साल के जन्मदिन पर क्या दोगी, तो बेटा, मैं तुझे अपना दिल दे रही हूँ, उसको हमेशा संभाल कर रखना। हैप्पी बर्थ डे बेटा''।

एक माँ इसलिए मर गयी क्योंकि उसका बेटा जी सके। दुनिया में माँ से बड़ा दिल किसी का नहीं। माँ के दिल जैसा दुनिया में कोई दिल नहीं।

पानी का ग्लास

एक बार किसी रेलवे प्लैटफॉर्म पर जब गाड़ी रुकी तो एक लड़का पानी बेचता हुआ निकला। ट्रेन में बैठे एक सेठ ने उसे आवाज़ दी, ऐ लड़के इधर आ। लड़का दौड़कर आया। उसने पानी का गिलास भरकर सेठ की ओर बढ़ाया तो सेठ ने पूछा, कितने पैसे में? लड़के ने कहा, पच्चीस पैसे। सेठ ने उससे कहा कि पंद्रह पैसे में देगा क्या? यह सुनकर लड़का हल्की मुस्कान दबाए पानी वापस घड़े में उड़ेलता हुआ आगे बढ़ गया। उसी डिब्बे में एक महात्मा बैठे थे, जिन्होंने यह नज़ारा देखा था कि लड़का मुस्कराया पर मौन रहा। ज़रूर कोई रहस्य उसके मन में होगा। महात्मा नीचे उतरकर उस लड़के के पीछे-पीछे गए। बोले, ऐ लड़के, ठहर ज़रा, यह तो बता कि तू हँसा क्यों? वह लड़का बोला, महाराज! मुझे हँसी इसलिए आई कि सेठजी को प्यास तो लगी ही नहीं थी, वे तो केवल पानी के गिलास का रेट पूछ रहे थे। महात्मा ने पूछा, लड़के, तुझे ऐसा क्यों लगा कि सेठजी को प्यास लगी ही नहीं थी। लड़के ने जवाब दिया, महाराज! जिसे वाकई प्यास लगी हो वह कभी रेट नहीं पूछता, वह तो गिलास लेकर पहले पानी पीता है, फिर बाद में पूछेगा कि कितने पैसे देने हैं? पहले कीमत पूछने का अर्थ हुआ कि प्यास लगी ही नहीं है। वास्तव में जिन्हें ईश्वर और जीवन में कुछ पाने की तमन्ना होती है, वे वाद-विवाद में नहीं पड़ते। पर जिनकी प्यास सच्ची नहीं होती, वे ही वाद-विवाद में पड़े रहते हैं। वे साधना के पथ पर आगे नहीं बढ़ते। अगर खुदा नहीं है तो उसका ज़िक्र क्यों? और अगर खुदा है तो फिर फिक्र क्यों?

आजमगढ़-उ.प्र.। कृषि मेला में जिला पंचायत अध्यक्ष मीरा यादव को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रंजना। साथ हैं ब्र.कु. अनिता, ब्र.कु. रीमा तथा अन्य।

बर्दघाट-नेपाल। पूर्व ऊर्जा मंत्री एवं सांसद माननीय गोकर्ण विष्टजी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. परमेश्वरी। साथ हैं ब्र.कु. बृन्दा तथा ब्र.कु. दर्शनी।

कूच वेहर-प.बंगाल। सेवाकेन्द्र की ओर से सरकारी अंध विद्यालय में दृष्टिहीन विद्यार्थियों को सर्दी के कपड़े तथा स्कूल बैग प्रदान करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. स्वप्न। साथ हैं स्कूल के प्रिन्सीपल फनिभूषण जी तथा ब्र.कु. बपी।

नई दिल्ली। एयरटेल दिल्ली हाल्फ मैराथॉन 2016 में ब्रह्माकुमारीज़ के स्पोर्ट्स विंग द्वारा सहयोग प्रदान किया गया तथा ब्रह्माकुमारीज़ के 200 प्रतिभागियों ने ब्र.कु. जगबीर,मा.आबू के निर्देशन में मैराथॉन में भाग लिया।

पालम विहार-गुरूग्राम। सेवाकेन्द्र के 19वें वार्षिकोत्सव पर दीप प्रज्वलित करने के पश्चात् उपस्थित हैं के.सी. जोहरी, डॉ. अवधेश शर्मा, जस्टिस वी.ईश्वरैय्या, ब्र.कु. उर्मिल, डॉ. जी.प्रसन्ना कुमार, ब्र.कु. सुदेश तथा ब्र.कु. विरेन्द्र।

शाहबाद-बरेली(उ.प्र.)। त्रिदिवसीय संगीतमय राजयोग शिविर 'गीतों में गीता ज्ञान' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए विधायक काशीराम दिवाकर, बी.जे.पी. शहर विधान सभा प्रभारी सुरेश बाबू गुप्ता, ब्र.कु. अविनाश, ब्र.कु. पार्वती, एडवोकेट ब्र.कु. ओमप्रकाश तथा अन्य।